11.11.2020 Wed.

पाठ्य पुस्तक के प्रश्न अभ्यास

प्रश्न कविता की दो पंक्तियों को पढ़ने तथा विचार करने से आपके मन-मस्तिष्क में जो चित्र उभरता है, उसे लिखकर व्यक्त कीजिए।

उत्तर कविता की पहली दो पंक्तियाँ पढ़ने तथा विचार करने से हमारे मन-मस्तिष्क में आक्रोश, चिंता और करुणा का भाव उमड़ता है। कोहरे से ढँकी सरदी की सुबह में बच्चों का काम पर जाना मन में करुणा भाव पैदा करता है। जिस प्रतिकूल परिस्थिति में हम बिस्तर से भी नहीं निकलना चाहते उन्हीं दशाओं में बच्चे काँपते-ठिठुरते काम पर जा रहे हैं। यह देख कर समाज की संवेदनहीनता एवं स्वार्थी प्रवृत्ति पर क्रोध आता है। ईश्वर जाने इन बच्चों की यह दुर्दशा कब समाप्त होगी? कब समाज बाल-मजदूरी से मुक्ति पाएगा? परन्तु कोई समाधान न होने के कारण चिंता की रेखा और गहरी हो गयी है।

प्रश्न 2 कवि का मानना है कि बच्चों के काम पर जाने की भयानक बात को विवरण की तरह न लिखकर सवाल के रूप में पूछा जाना चाहिए कि "काम पर क्यों जा रहे हैं बच्चे?" कवि की दृष्टि में उसे प्रश्न की तरह क्यों पूछा जाना चाहिए?

उत्तर विवरण सामान्य कथन और सूचना पर विशेष प्रभाव पैदा नहीं करते। विवरण को लोग घटना की तरह भूल जाते हैं या सुनकर अनसुना कर देते हैं किन्तु प्रश्न मन-मस्तिष्क में हल-चल करते हैं। उत्तर की अपेक्षा में हृदय में उथल-पुथल मचती रहती है। इसलिए प्रश्न पूछा जाना चाहिए कि ऐसी क्या विवशता है कि बच्चे स्कूल न जाकर मज़दूरी कर रहे हैं।

प्रश्न 3 सुविधा और मनोरंजन के उपकरणों से बच्चे वंचित क्यों हैं?

उत्तर ऐसे बच्चों के माता-पिता की स्थिति दयनीय होती है। यह बच्चे समाज के दलित और शोषित वर्ग से आते हैं जो ग़रीबी रेखा के नीचे का जीवन जीते हैं। अपना पेट पालकर जीवित रहने के लिए उनका काम पर जाना ज़रूरी है। काम करने के कारण वे सुविधा और मनोरंजन के उपकरणों से वंचित रह जाते हैं क्योंकि उनके पास धन और समय का अभाव हमेशा बना रहता है।

प्रश्न 4 दिन-प्रतिदिन के जीवन में हर कोई बच्चों को काम पर जाता देख रहा है/रही है, फिर भी किसी को कुछ अटपटा नहीं लगता। इस उदासीनता के क्या कारण हो सकते हैं?

उत्तर आज मनुष्य इतना स्वार्थी और भौतिकवादी हो गया है कि उसे अपना स्वार्थ ही नज़र

आता है। लोगों की भावनाएँ एवं संवेदनाएँ समाप्त हो गयी हैं। हमें केवल अपने सुख-दुख, लाभ-हानि की अनुभूति होती है। स्थिति केवल यही नहीं है हममें से कुछ ऐसे भी हैं जो उनकी पीड़ा और दुख की उपेक्षा करते हैं। आर्थिक विषमता की खाई इतनी गहरी हो गयी है कि कुलीन वर्ग के लोग इनकी ओर झाँकते भी नहीं हैं। आज लोग बच्चों को काम पर जाता देखकर अभ्यस्त हो गए हैं। बालश्रम कानून का पालन कराने वाले अधिकारियों द्वारा अपने कर्तव्य का उचित निर्वहन न करना समाज की उदासीनता बढ़ता है।